साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695

Volume 03 Issue 05

May 2017

ऐ मेरे भगवान मेरी भी विनती सुन

उमेश कुमार

ऐ मेरे भगवान
मेरी भी विनती सुन
बना मुझे महान
एक सच्चा इन्सान
रहूँ मैं हरदम
छल कपट से अनजान
पर रहे मरते दम
मेरे मन में, कार्य में
प्रेम, दया और सहानुभूति
करू सदा मैं उन्नति
ऐसी देना मेरी मति
मुझ पर उपकार करना
इतना जरुर देना
कि सदा रहे घर में
दो वक्त की रोटी
और दूसरों की सहायता के लिए
थोड़ा सा धन
और सहानुभूतिपूर्ण मन
ऐ मेरे भगवान
मेरी भी विनती सुन
अपने सेवक की टोली में
मुझे भी तू चुन
नहीं चाहिए मुझे मुक्ति
इस जग से ही रहे आसक्ति
रहकर इसी जग में
कुछ करना चाहता हूँ

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

इस धरा को स्वर्ग-सा बनाना चाहता हूँ
कुछ कर सकूँ तू बने रहना प्रेरणा
करूँ मैं सब की मंगल कामना
हो मानव का मानव पे गर्व
हर कोई मनाये खुशियों का पर्व
न कही गम का बदल छायें
न किसी की घर दुःख आयें
हर वक्त रहे प्रसन्न मन
ऐ मेरे भगवान
मेरी भी विनती सुन
उठाना मुझें ऊँचा
पर इतना भी ऊँचा नहीं
कि किसी को गले न लगा सकूँ
इतना भी छोटा न रहने देना
कि हर वक्त दिन रात
पैरों से कुचला जाऊ
मुझे देववाणी नहीं
मीठी बोली देना
बात हो और दिल जीत जाऊ
सुबह शाम तेरा भजन गुनगुनाऊ
मुझें नहीं चाहिए मुक्ति
खुश रखना जबतक है जीवन
ऐ मेरे भगवान
मेरी भी विनती सुन